

Volume 13, Number 1 & 2

January & July 2020

ISSN 0973-9580



LYNCEAN

***JOURNAL OF
CULTURAL AND
HISTORICAL STUDIES***

Semi-Annual

Editor: Pratibha

छत्तीसगढ़ में सामाजिक समरसता के ध्वजवाहक गुरु घासीदास : एक अध्ययन

डॉ. पंकज सिंह*

छुआछूत तथा अस्पृश्यता भारतीय समाज में एक असाध्य रोग की भांति है, जिसने भारतीय समाज को कई टुकड़ों में विभाजित कर दिया है। विशेषकर ऊंची और नीची जातियों में काफी भेदभाव और वैमनस्य उत्पन्न होने से सामाजिक एकता छिन्न-भिन्न हुई। छुआछूत के कारण ही सामाजिक और आर्थिक विकास के प्रायः सभी सुअवसर और साधन ऊंची जातियों के हाथों में थे। फलस्वरूप आगे भी समाज का अधिक भाग गरीब, अशिक्षित और प्रत्येक दृष्टि से पीछे रह गया। अतएव पूरे देश के पिछड़ेपन के प्रमुख कारणों में से एक छुआछूत तथा अस्पृश्यता की भावना भी है। भारतीय समाज में छुआछूत, जाति प्रथा का एक घृणित पहलू है। हमारे देश में जाति प्रथा का उद्भव लगभग तीन हजार वर्ष पहले हुआ था। जाति व्यवस्था का सबसे कुरूप स्वरूप यह रहा कि उसने कुछ वर्गों को अस्पृश्य और जातिविहीन घोषित कर दिया। फिर इसके बहाने उन्हें जमीन के स्वामित्व, मंदिर में प्रवेश, गांव के कुएँ, तालाब जैसे पानी के स्रोतों से वंचित रहना पड़ा। अस्पृश्यों के साथ अन्य सभी जातियों को, यहां तक कि उनके सबसे निचले तबकों को भी अछूतों से शारीरिक स्पर्श करने की मनाही थी। वे उनके हाथों का पानी या भोजन तक स्वीकार नहीं कर सकते थे।¹

गुरु घासीदास का आविर्भाव जिन दिनों हुआ उन दिनों छत्तीसगढ़ अंचल में मराठों का शासन था। देश के कतिपय भागों पर अंग्रेजी राज की पृष्ठभूमि बन रही थी अराजकता, अनेकता व कुशासन से

*सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, म. प्र.